ORIGINAL RESEARCH PAPER

Political Science

डिजिटल मीडिया और भारतीय लोकतंत्रः अवसर, चुनौतियाँ एवं समकालीन परिप्रेक्ष्य

KEY WORDS: डिजिटल मीडिया, भारतीय लोकतंत्र, राजनीतिक सहभागिता, जनमत निर्माण, दुष्प्रचार, डिजिटल साक्षरता

मंदीप सिंह

शोधार्थी राजनीतिक विज्ञान विभाग ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी, हिसार (हरियाणा)

ABSTRACT

डिजिटल तकनीक के विकास ने भारतीय लोकतंत्र में सूचना के आदान–प्रदान, राजनीतिक संवाद और नागरिक सहभागिता के स्वरूप को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इंटरनेट, सोशल मीडिया और डिजिटल समाचार माध्यमों ने नागरिकों को राजनीतिक घटनाओं से परिचित होने तथा सार्वजनिक मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त करने के नए अवसर प्रदान किए हैं। इससे राजनीतिक जागरूकता, जनभागीदारी और शासन की जवाबदेही को प्रोत्साहन मिला है। दूसरी ओर, फर्जी समाचार, दुष्प्रचार, राजनीतिक ध्रुवीकरण, डीपफेक और निजता का उल्लंघन जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। अध्ययन का निष्कर्ष है कि डिजिटल मीडिया लोकतंत्र को अधिक सहभागी, पारदर्शी और उत्तरदायी बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है, बशर्ते इसके उपयोग में विश्वसनीयता, नैतिकता और नागरिक अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए।

प्रस्तावना

लोकतंत्र ऐसी शासन व्यवस्था है जिसमें जनता को राजनीतिक निर्णयों में भाग लेने, अपने प्रतिनिधियों का चयन करने तथा शासन की नीतियों पर विचार व्यक्त करने का अधिकार प्राप्त होता है। लोकतंत्र की सफलता के लिए नागरिकों की राजनीतिक जागरूकता, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, सूचना की उपलब्धता और शासन की जवाबदेही आवश्यक है। इस संदर्भ में मीडिया को लोकतंत्र का महत्त्वपूर्ण आधार माना जाता है।

भारत में स्वतंत्रता के पश्चात समाचार पत्रों, रेडियो और टेलीविजन ने राजनीतिक चेतना तथा जनमत निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेकिन इंटरनेट और डिजिटल तकनीक के विस्तार ने संचार के पारंपरिक स्वरूप को बदल दिया है। आज सोशल मीडिया, ऑनलाइन समाचार पोर्टल, यूट्यूब और विभिन्न मैसेजिंग एप्लिकेशन राजनीतिक विचारों के प्रसार के प्रमुख माध्यम बन गए हैं।

डिजिटल मीडिया की विशेषता यह है कि नागरिक केवल सूचना प्राप्त करने वाले नहीं, बल्कि स्वयं सूचना का निर्माण और प्रसार भी कर सकते हैं। इससे राजनीतिक संवाद का दायरा व्यापक हुआ है। हालाँकि, गलत सूचनाओं, राजनीतिक ध्रुवीकरण और व्यक्तिगत डेटा के दुरुपयोग जैसी समस्याओं ने लोकतांत्रिक व्यवस्था के समक्ष नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। इसलिए डिजिटल मीडिया और भारतीय लोकतंत्र के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन वर्तमान समय में विशेष महत्त्व रखता है।

भारतीय लोकतंत्र में डिजिटल मीडिया की भूमिका

डिजिटल मीडिया ने भारतीय लोकतंत्र में सूचना और संचार की प्रक्रिया को अधिक व्यापक एवं संवादात्मक बनाया है। इसके माध्यम से नागरिक राजनीतिक घटनाओं, सरकारी नीतियों, चुनावी घोषणाओं और सार्वजनिक समस्याओं से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। पहले जहाँ राजनीतिक सूचना के लिए नागरिक मुख्यतः समाचार पत्रों और टेलीविजन पर निर्भर रहते थे, वहीं अब अनेक डिजिटल स्रोत उपलब्ध हैं। डिजिटल माध्यमों ने नागरिकों को अपनी समस्याएँ और विचार सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत करने का अवसर दिया है। स्थानीय विकास, भ्रष्टाचार, शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रशासनिक समस्याओं को सोशल मीडिया के माध्यम से संबंधित अधिकारियों तथा व्यापक समाज तक पहुँचाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त राजनीतिक दल, सामाजिक संगठन और नागरिक समूह भी अपने विचारों तथा कार्यक्रमों के प्रचार के लिए इन माध्यमों का उपयोग कर रहे हैं।

भारतीय लोकतंत्र में डिजिटल मीडिया के अवसर

डिजिटल मीडिया ने भारतीय लोकतंत्र में अनेक नई संभावनाएँ विकसित की हैं। इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से नागरिकों को संविधान, संसद, निर्वाचन प्रक्रिया, सरकारी योजनाओं तथा राजनीतिक दलों के घोषणापत्रों से संबंधित जानकारी आसानी से उपलब्ध हो रही है। इससे विशेषकर युवा वर्ग में राजनीतिक जागरूकता विकसित करने के अवसर बढ़े हैं।

डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने नागरिकों को ऑनलाइन परिचर्चाओं, जन–अभियानों और सामाजिक आंदोलनों में भाग लेने का अवसर प्रदान किया है। इसके माध्यम से स्थानीय समस्याएँ भी राष्ट्रीय स्तर पर सार्वजनिक चर्चा का विषय बन सकती हैं। राजनीतिक दल सोशल मीडिया, वेबसाइट और वीडियो प्लेटफॉर्मों के माध्यम से अपने घोषणापत्र, चुनावी वादे और नीतियाँ जनता तक पहुँचाते हैं। दूसरी ओर, मतदाता उम्मीदवारों की छवि तथा राजनीतिक दलों के कार्यों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं। इससे राजनीतिक संवाद की प्रक्रिया अधिक व्यापक हुई है।

डिजिटल मीडिया शासन में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने का भी माध्यम बन सकता है। नागरिक सरकारी योजनाओं और प्रशासनिक निर्णयों की जानकारी प्राप्त करने के साथ–साथ अपनी समस्याएँ संबंधित अधिकारियों तक पहुँचा सकते हैं। इसके अतिरिक्त स्वतंत्र पत्रकारों और छोटे समाचार संगठनों को डिजिटल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचने का अवसर मिला है। इससे समाचारों के स्रोतों में विविधता और वैकल्पिक पत्रकारिता को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है।

भारतीय लोकतंत्र के समक्ष डिजिटल मीडिया की चुनौतियाँ

डिजिटल मीडिया के बढ़ते प्रभाव के साथ अनेक गंभीर चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। इनमें सबसे प्रमुख समस्या फर्जी समाचार और भ्रामक सूचनाओं का प्रसार है। सोशल मीडिया पर अपुष्ट समाचार, पुरानी तस्वीरों और संपादित वीडियो को वास्तविक घटनाओं के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। चुनावी समय में ऐसी सामग्री मतदाताओं की राजनीतिक धारणाओं को प्रभावित कर सकती है।

राजनीतिक ध्रुवीकरण भी डिजिटल लोकतंत्र की एक प्रमुख चुनौती है। सोशल मीडिया पर समान विचारधारा वाले समूहों से अधिक जुड़ाव होने के कारण विरोधी विचारों के प्रति असहिष्णुता बढ़ सकती है। इससे राजनीतिक मतभेद कई बार सामाजिक तनाव और वैचारिक टकराव का रूप ले लेते हैं। भारतीय लोकतंत्र की बहुलतावादी प्रकृति को बनाए रखने के लिए स्वस्थ राजनीतिक संवाद आवश्यक है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डीपफेक तकनीक के दुरुपयोग ने भी नई समस्याएँ उत्पन्न की हैं। इनके माध्यम से किसी व्यक्ति की नकली आवाज, तस्वीर या वीडियो तैयार करके प्रसारित किया जा सकता है। राजनीतिक क्षेत्र में इसका उपयोग भ्रम फैलाने और व्यक्तियों की छवि प्रभावित करने के लिए किया जा सकता है। डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर व्यक्तिगत जानकारी का अनुचित उपयोग भी निजता और नागरिक अधिकारों के लिए चुनौती है। एक अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और डिजिटल मीडिया के नियमन के बीच संतुलन का है।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में डिजिटल मीडिया

वर्तमान समय में डिजिटल मीडिया भारतीय राजनीति का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। स्मार्टफोन और इंटरनेट के विस्तार ने राजनीतिक संचार की प्रकृति को बदल दिया है। राजनीतिक दल चुनावी प्रचार, जनसंपर्क और अपने कार्यक्रमों के प्रसार के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्मों का व्यापक उपयोग कर रहे हैं। यूट्यूब और सोशल मीडिया पर स्वतंत्र पत्रकार, राजनीतिक विश्लेषक तथा कंटेंट क्रिएटर भी सार्वजनिक विमर्श को प्रभावित कर रहे हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास ने राजनीतिक संचार में नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। इसके माध्यम से सरकारी सूचनाओं का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद और जटिल नीतियों की सरल व्याख्या संभव हुई है। दूसरी ओर, इसी तकनीक के माध्यम से भ्रामक सामग्री तैयार करने का खतरा भी बढ़ा है। अतः समकालीन भारतीय लोकतंत्र में डिजिटल तकनीक का जिम्मेदार, पारदर्शी और नैतिक उपयोग आवश्यक है।

डिजिटल मीडिया को अधिक प्रभावी बनाने के उपाय

भारतीय लोकतंत्र में डिजिटल मीडिया की सकारात्मक भूमिका को मजबूत करने के लिए नागरिकों में डिजिटल साक्षरता का विस्तार आवश्यक है। विद्यालयों और वि ववविद्यालयों में सूचना सत्यापन तथा जिम्मेदार ऑनलाइन व्यवहार को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। राजनीतिक दलों और डिजिटल प्लेटफॉर्मों को अपने प्रचार एवं विज्ञापन संबंधी गतिविधियों में पारदर्शिता रखनी चाहिए।

इसके अतिरिक्त स्वतंत्र पत्रकारिता और तथ्य–जाँच संस्थाओं को प्रोत्साहित करना, ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट सुविधाओं का विस्तार करना तथा व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। डिजिटल मीडिया के नियमन में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता,

संवैधानिक अधिकारों और सार्वजनिक हित के बीच संतुलन बनाए रखना भी महत्त्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि डिजिटल मीडिया ने भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक सूचना, जनसंचार और नागरिक सहभागिता के स्वरूप को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इसने नागरिकों को राजनीतिक गतिविधियों से जुड़ने, सरकारी नीतियों पर विचार व्यक्त करने और जनप्रतिनिधियों की जवाबदेही सुनिश्चित करने के नए अवसर प्रदान किए हैं। चुनावी राजनीति और जनमत निर्माण में भी इसकी भूमिका महत्त्वपूर्ण होती जा रही है।

दूसरी ओर, फर्जी समाचार, राजनीतिक ध्रुवीकरण, डीपफेक, डिजिटल असमानता और निजता संबंधी समस्याएँ इसकी लोकतांत्रिक उपयोगिता के सामने गंभीर चुनौतियाँ प्रस्तुत करती हैं। अंततः कहा जा सकता है कि डिजिटल मीडिया भारतीय लोकतंत्र के विकास का एक महत्त्वपूर्ण साधन है, लेकिन इसकी सफलता केवल तकनीकी विस्तार पर निर्भर नहीं करती। इसके लिए जागरूक नागरिक, स्वतंत्र पत्रकारिता, पारदर्शी शासन, उत्तरदायी डिजिटल प्लेटफॉर्म और प्रभावी कानूनी व्यवस्था आवश्यक हैं। यदि डिजिटल माध्यमों का उपयोग लोकतांत्रिक मूल्यों, संवैधानिक अधिकारों और सामाजिक समावेशन को ध्यान में रखकर किया जाए, तो वे भारतीय लोकतंत्र को अधिक सहभागी, पारदर्शी और सशक्त बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. मित्तल, अरविंद एवं मित्तल, मिशेल (2010), संचार के सिद्धांत, ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली।
2. पाराशर, जवरिमल (2001), जनसंचार माध्यमों का सामाजिक चरित्र, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
3. धुलिया, सुभाष (2001), सूचना क्रांति की राजनीति व विचारधारा, ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली।
4. कुमार, केवल जे. (2017), भारत में जनसंचार, जैको पब्लिशिंग हाउस, मुंबई।
5. भारत निर्वाचन आयोग, राजनीतिक दलों एवं उम्मीदवारों द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग से संबंधित दिशा–निर्देश, नई दिल्ली।
6. भारत सरकार (2023), डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम, 2023, भारत का राजपत्र।
7. ळवअमतदउमदज वि प्दिकपं ;2023द्ध जैम क्पहपजंस ब्मतेवदंस कंजं च्तवजमबजपवद ।बजए 2023
8. च्नदंजींउइमांतए ेपदए ज्ञनउंतए ँदहममज ंदक डवींदए ैतपतंउ ;2026द्धए । डवइपसम च्वचनसंतरू डमकपं म्दजमतजंपदउमदज ंदक जीम च्वसपजपबंस पद क्पहपजंस प्दकपंए छमू ल्वता न्दपअमतेपजल च्तमेण
9. ।जीपुनमए ।कतपंदए च्तजींतंजीपए टपइवकी ंदक ैतपदपअेंए ैण टण ;स्केण्द्ध ;2019द्धए जैम च्वसपजपबे वि क्पहपजंस प्दकपंरू ठमजूममद स्वबंस ब्वउचनसेपवदे ंदक ज्तंदेदंजपवदंस च्तमेनतमेए ल्वितक न्दपअमतेपजल च्तमेण
10. छपदंद ैमअंदजप ;2007द्धए भ्मंकसपदमे तिवउ जीम भ्मंतजसंदकरू त्मपदअमदजपदह जीम भ्पदकप च्नइसपबै चीमतम ैं ।ळ च्नइसपबंजपवदेए छमू क्मसीपण